साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2555, माघ पूर्णिमा, 7 फरवरी 2012 वर्ष 41 अंक 8

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

मातापितु उपट्ठानं, पुत्तदारस्स सङ्गहो।
अनाकुला च कम्मन्ता, एतं मङ्गलमुत्तमं॥

खुद्दकपाठपालि, मङ्गलसुत्तं ६

-- माता पिता की सेवा करना, पुत्र-स्त्री (परिवार) का पालन-पोषण करना और आकुल-उद्विग्न न करने वाले (निष्पाप) कर्म करने - ये उत्तम मंगल हैं।

मार-प्रेरित देवदत्त

सिद्धार्थ गौतम का समवयस्क ममेरा भाई देवदत्त बचपन से ही उनके साथ खेलता-कूदता रहा। लेकिन दोनों के स्वभाव में जमीन-आसमान का अंतर। एक जितना सज्जन, दूसरा उतना ही दुर्जन।

जब सिद्धार्थ गौतम भिक्षु होकर सत्य की खोज में तपश्चर्या करने निकले और सम्यक सम्बोधि प्राप्त की तब उनका सम्मान बहुत बढ़ गया। यह देख कर ईर्ष्या के वशीभूत होकर देवदत्त भी उनका शिष्य होने का ढोंग करके भिक्षु के रूप में उनके साथ हो लिया। परंतु बुद्ध तो बुद्ध और देवदत्त देवदत्त। बुद्ध को राजा, महाराजा, प्रसिद्ध ब्राह्मण, धनी, व्यवसायी और अन्य सभी लोग पूजने लगे तब देवदत्त की ईर्ष्या और प्रबल हो उठी।

वह अत्यंत चालाकी के साथ भगवान और उनकी शिक्षा के बारे में कुछ मिथ्या बातें फैला कर अनेकों के मन में भ्रांतियां पैदा करने लगा और उन्हें अपनी ओर मिलाने का प्रयत्न करने लगा। इसमें वह सफल भी हुआ। क्योंकि वह भगवान के इतना समीप था, लोगों ने समझा कि यह जो कुछ हो रहा है वह सच ही होगा। अतः भगवान के ५०० भिक्षुओं को उनसे अलग करके उसने अपनी ओर खींच लिया और एक अलग भिक्षुसंघ स्थापित करके उसका प्रमुख बन बैठा। यही उसकी लालसा थी, परंतु इसमें वह सफल नहीं हुआ। भगवान को छोड़ कर उसके साथ मिले हुए ये सभी भिक्षु वास्तविकता को जान कर पुनः भगवान की ओर आ गये। इसके बाद भी वह अनेक ऐसे कु-कृत्य करता रहा जिनसे कि भगवान की तुलना में उसकी अधिक प्रसिद्धि हो। लेकिन सफल नहीं हुआ।

परंतु मार का खेल बहुत अजीब होता है। जैसे सम्यक सम्बुद्ध को एक देवदत्त मिला, वैसे ही मेरे जैसे बुद्धपुत्र को भी ऐसा कोई देवदत्त मिलना स्वाभाविक था। पिछले कई वर्षों से यह देवदत्त मिथ्या आरोपण के **बेनाम पत्र** भेजता रहा और समय-समय पर विपश्यना के कई प्रमुख साधकों तथा कुछ आचार्यों को भी गुमराह करता रहा।

इस देवदत्त के प्रति अत्यंत मैत्री-भाव रखते हुए, मैं इसे अन्य दुष्कर्मों से बचाना चाहता हूं और यह भी चाहता हूं कि मेरे साधक इसके मिथ्या प्रचार के बहकावे में न आ जायँ। अतः न चाहते हुए भी इस देवदत्त के लांछनों के मिथ्यात्व का स्पष्टीकरण करना आवश्यक समझता हूं।

इसके गुमनाम पत्रों में विपश्यना केंद्रों, विश्व विपश्यना पगोडा, विपश्यना विशोधन विन्यास के साथ-साथ मेरे प्रति और मेरे परिवार के प्रति भी मिथ्या लांछन लगाये गये हैं। यथा--

(१) म्यंमा में बाढ़ से बचाव के लिए लोगों द्वारा दिये गये दान का दुरुपयोग।

-- यह सच है कि जब म्यंमा में जल-प्रलय (बाढ़) से बहुत बड़ी तबाही हुई और उसमें अपना एक केंद्र भी नष्ट हो गया, तब अपने यहां के साधकों ने उनकी सहायता के लिए दान भेजा। इस दान से बाढ़-पीड़ितों के लिए आवश्यक सामग्री भेजी जाती रही। तब एकाएक यह सूचना मिली कि बर्मी सरकार ने विदेशों से सहायता मंगायी जानी बंद कर दी। तब तक बाढ़-पीड़ितों की सहायता के लिए जितना दान एकत्र हुआ उसे बर्मा भेजा जाता रहा, परंतु उसमें से कुछ बच गया। म्यंमा का जो केंद्र नष्ट हो गया था, उसका भी पुनर्निर्माण हो चुका था। इस अवस्था में हम बचे हुए दान का क्या करते? तब म्यंमा के अपने प्रमुख साधना केंद्र की ओर से यह सूचना आई कि अब दान की इस बची हुई धनराशि को वहीं किसी विपश्यना केंद्र में जहां आवश्यक हो, लगा दें। हमने यही किया। न इस राशि को किसी ने व्यक्तिगत रूप से अपनाने का दुष्कर्म किया और न ही यह ग्लोबल पगोडा भेजी गई, बल्कि पूरा धन विपश्यना केंद्रों में ही लगा।

(२) दूसरा लांछन यह लगाया कि विपश्यना केंद्रों में ठीक से अकाउंट नहीं रखा जाता है। यह तो सभी जानते हैं कि जब कभी कोई नया केंद्र स्थापित होता है, तब उसे तब तक स्वीकृति नहीं दी जाती जब तक कि वह संबंधित सरकारी विभाग में रजिस्टर्ड न करा लिया गया हो। ऐसा होने के बाद ही उसको कोई नया नाम दिया जाता है। सरकार द्वारा जब कोई केंद्र पंजीकृत हो जाय तब उसे अपना ऑडिट किया हुआ अकाउंट हर वर्ष सरकार को पेश करना पड़ता है। यदि अकाउंट ही नहीं है अथवा उस अकाउंट में पारदर्शिता नहीं है तो सरकार उस केन्द्र की मान्यता को कैसे कायम रहने देगी? स्पष्ट है कि यह लांछन बिल्कुल बेबुनियाद है।

(३) **विपश्यना विशोधन विन्यास**- जिसे सरकार के आयकर विभाग से पूर्ण छूट है, वह रिसर्च का काम नहीं कर रहा।

-- यह संस्था रिसर्च के काम में ही जुटी हुई है और हर वर्ष सरकार को अपनी रिसर्च का लेखा-जोखा भेजती है जिसे जांच कर ही सरकार उसकी स्वीकृति को कायम रखती है। इस संस्था द्वारा रिसर्च का काम लगातार होता रहा है और अब भी हो रहा है। एक बड़ा काम बुद्ध-वाणी के तिपिटक का और उनके सहायक ग्रंथों का बर्मी से नागरी में लिप्यन्तरण करके, पुस्तकों के रूप में प्रकाशन किया गया और संबंधित विश्वविद्यालयों तथा पालि के विद्वानों को बिना मूल्य भेंट किया गया। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक लिपियों में भी लिप्यन्तरण करके, उनको इंटरनेट पर स्थापित कर दिया ताकि सभी देशों के लोग इसका लाभ उठा सकें।

इसके अतिरिक्त और भी अनुसंधान होते ही रहते हैं जिनमें से प्रमुख यह है कि भगवान बुद्ध ने 'बौद्धधर्म' नहीं सिखा कर 'धर्म' सिखाया। लोगों को 'बौद्ध' नहीं बना कर 'धार्मिक' बनाया। क्योंकि संपूर्ण पालि साहित्य में कहीं 'बौद्ध' शब्द का प्रयोग है ही नहीं। इस सही अनुसंधान का अनेक देशों में बहुत विरोध हुआ लेकिन सच्चाई प्रकाशित किये जाने पर सभी शांत हुए।

अब इतिहास की सच्चाई के आधार पर एक और अत्यंत महत्त्वपूर्ण अनुसंधान का कार्य चल रहा है जो कि शीघ्र ही लोगों के सामने आयगा, जिससे कि बुद्ध की शिक्षा के बारे में अनेक प्रकार की जो भ्रांतियां हैं, वे दूर होंगी।

इसके अतिरिक्त भगवान की इस वाणी को व्यावहारिक रूप में क्रियान्वित किया जा रहा है जिसमें उन्होंने स्पष्ट कहा कि वाणी के पूरे साहित्य को कोई कंठस्थ भी कर ले, परंतु उसके व्यावहारिक पक्ष यानी विपश्यना का जरा भी अभ्यास न करे, तो वह व्यक्ति परायी गायों को चराने वाला ग्वाला जैसा ही है, जिसे उन गायों का एक बूंद भी दूध नहीं मिलता। भगवान के इस आदेश को, पालि के विद्यार्थियों के सम्मुख आदर्श रूप में उपस्थित करने के लिए इस संस्था ने पालि-प्रशिक्षण का जो कार्य शुरू किया, उसमें सभी विद्यार्थियों को अनिवार्य रूप से विपश्यना का अभ्यास कराया जाता है। अतः इस संस्था पर कोई भी लांछन लगाना नितांत निराधार है।

(४) **विपश्यना पगोडा** -- न जाने क्यों इस देवदत्त को इस पगोडा से इतनी चिढ़ है कि यह अनेक विपश्यी साधकों के मानस में इस पगोडा के विरुद्ध जहर भरता रहता है। यद्यपि इससे सभी प्रभावित नहीं होते परंतु कई साधकों का मानस विचलित हो ही जाता है। जबकि अनेक साधक यह खूब समझते हैं कि यह विशाल पगोडा बर्मा के प्रमुख आचार्य सयाजी ऊ बा खिन के उपकार तथा बुद्ध की शिक्षा को विगत दो हजार वर्षों तक शुद्ध रूप में जीवित रखने वाले म्यंमा देश के उपकार के प्रति श्रद्धा और कृतज्ञता प्रकट करने के लिए बना है। यदि म्यंमा ने यह पावन विद्या चिरकाल तक सँभाल कर नहीं रखा होता, और प्रमुख आचार्य सयाजी ऊ बा खिन ने इसे बर्मा के बाहर न भेजा होता, तो लाखों की संख्या में साधक कैसे इससे लाभान्वित होते?

इस निर्माण का एक और कारण यह भी है कि इसमें भगवान बुद्ध की पावन धातुएं स्थापित की गयी हैं और उनकी पावन तरंगों के नीचे बने विशाल ध्यान-कक्ष में आठ से दस हजार साधक अत्यंत धार्मिक वातावरण में साधना का अभ्यास करते हैं। अब तक विश्व में ऐसे किसी विशाल कक्ष का निर्माण नहीं हुआ जिसमें इतनी बड़ी संख्या में बैठे हुए विपश्यी साधकों की तरंगों से सारा कक्ष प्रभावित होता रहे।

ऐसे पगोडा में बुद्ध या अरहंत की देह-धातु रखे जाने पर उस पर किसी के पांव नहीं पड़ने चाहिए, जिससे कि धातुओं का अपमान हो। ध्यान-कक्ष के ऊपर भी किसी के पांव न पड़ें, इसीलिए पगोडा-निर्माण की रचना ऐसी है कि इसके ऊपर तक कहीं पांव रखने की जगह ही नहीं, जिस पर पांव रख कर ध्यान-कक्ष के वायुमंडल की तरंगों को कोई दूषित कर सके। फिलहाल जो पावन धातुएं राजकीय संग्रहालय में रखी गई हैं, विश्वास है उन्हें संग्रहालय की अपमानजनक स्थिति से निकाल कर इस पगोडा में सम्मानपूर्वक संस्थापित किया जायगा। --यह विशाल पगोडा सीमेंट-कंक्रीट से न बना कर केवल पत्थरों से बनाया गया है ताकि आगामी अढ़ाई हजार वर्षों तक कायम रहे और प्राचीन पालि साहित्य के अनुसार इस पगोडा के साथ-साथ ये पावन धातुएं कायम रहेंगी और साथ ही बुद्ध की शिक्षा भी।

(५) इस देवदत्त ने यह मिथ्या बात भी चलाई कि पगोडा के निर्माण से विपश्यना एक संप्रदाय मानी जाने लगेगी। उसे यह पगोडा देख कर ऐसी दुर्बुद्धि जागी, परंतु उसने यह नहीं समझा कि भारत और भारत के बाहर अनेक देशों में जो विपश्यना केंद्र हैं, लगभग उन सब पर छोटे या बड़े पगोडा बने हुए हैं। तो क्या इससे वे सांप्रदायिक स्थान माने जाने लगे?

(६) एक अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि कोई व्यावसायिक विज्ञापन देकर हम विपश्यना का प्रचार-प्रसार नहीं करते। पगोडा पर आने वाले दर्शक ही विपश्यना की जानकारी लेंगे और उसे फैलाएंगे। इसीलिए यहां आने वाले दर्शकों से कोई शुल्क नहीं लिया जाता।

(७) आगामी अढ़ाई हजार वर्षों तक इस पगोडा की पीढ़ी-दर-पीढ़ी देखभाल, मरम्मत, रख-रखाव आदि के खर्च का कहीं अभाव न हो, इसलिए एक **स्थायी कोष** स्थापित करने का निश्चय किया गया और उससे संबंधित नियमों के अनुसार पगोडा का कोई ट्रस्टी अथवा अन्य कोई भी व्यक्ति, इस स्थायी कोष में से एक पैसा भी नहीं निकाल सकता। केवल उसके ब्याज से पगोडा का रख-रखाव, उसकी मरम्मत, बिजली-पानी आदि का खर्च किया जा सकेगा, वह भी तदर्थ निर्मित संरक्षक-समिति की अनुमति से ही होगा।

(८) इस देवदत्त ने पगोडा को लेकर एक और झूठा और घृणित आक्षेप लगाया। वह यह कि जिन लोगों ने पगोडा के लिए धन उधार में दिया था, उनके पैसे अभी तक नहीं लौटाये गये। वह सच्चाई जानता है फिर भी ऐसा मिथ्या प्रचार करता है। वस्तुतः पगोडा के निर्माण के समय जिन लोगों ने श्रद्धापूर्वक ऐसी आर्थिक सहायता दी जो कि दान नहीं था, परंतु लंबे समय के लिए बिना ब्याज का कर्ज था। उनमें से अधिकतर लोगों के कर्ज चुका दिये गये। जो इक्के-दुक्के बचे हैं वे जानते हैं कि अभी भी पगोडा में धन का अभाव है। अतः स्वेच्छापूर्वक कहते हैं कि कर्ज वापिस लौटाने के लिए हमने कभी कोई समय-सीमा न तब बाँधी थी और न अब है। पगोडा को जब सहूलियत हो तब चुका दे, अन्यथा आवश्यक काम में लगाये रखे। ऐसी स्थिति में

पगोडा के ट्रस्टियों पर मिथ्या लांछन लगाना कितना भ्रामक है।

(९) देवदत्त कहता है कि मैं अपने परिवार को विपश्यना के कार्य से सर्वथा दूर रखूं। वह नहीं जानता कि भारत अथवा विश्व में विपश्यना का प्रचार-प्रसार कैसे आरंभ हुआ। कुछ लोग यह भी नहीं जानते कि बर्मा में रहते हुए मेरा सारा बड़ा परिवार ७-८ वर्ष के पुत्र से लेकर ६०-७० वर्ष के बूढ़े मां-बाप और बूढ़ी ताई-मां, सबने सयाजी ऊ बा खिन के चरणों में बैठ कर साधना सीखी। जो सबसे छोटा था उसने केवल आनापान सीखा। बाकियों ने अनेक विपश्यना शिविर किये। सबके मानस में स्वभावतः सयाजी ऊ बा खिन के प्रति अत्यंत श्रद्धा और कृतज्ञता का भाव तब भी था और आज भी है। पूज्य सयाजी ऊ बा खिन भी हमारे परिवार के सभी सदस्यों के प्रति असीम अनुकम्पा और मंगल-मैत्री का भाव रखते थे।

यह अभागा देवदत्त नहीं जानता कि सयाजी ऊ बा खिन के रिटायर होने पर मेरे पुत्र बनवारी और श्रीप्रकाश अत्यंत श्रद्धापूर्वक उनकी सेवा में रत रहे। ये दोनों ही बरमी भाषा के माध्यम से बर्मी स्कूल में बर्मी विद्यार्थियों के साथ ही पढ़े। अतः वहां की भाषा और संस्कृति को खूब जानते हैं।

यह सर्वविदित है कि जब मेरे गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन ने मुझे भारत में और विश्व में विपश्यना के शिविर लगाने के लिए भेजा तब यहां मेरा कोई सहायक नहीं था। हमारे जिस बड़े परिवार के अन्य लोग यहां रहते थे वे सब के सब आनंद-मार्ग में संलग्न थे। विपश्यना के प्रचार में उनसे सहायता की क्या आशा की जाती? ऐसी अवस्था में म्यंमा से यहां आकर बसे छहों पुत्रों में से चार तो स्कूल-कॉलेज की पढ़ाई में लग गये। केवल दो ने ही छोटा-मोटा व्यवसाय आरंभ किया, जिसका उन्हें कोई पूर्व अनुभव नहीं था। वे चाहते थे कि उनके व्यापार-धंधे को जमाने के लिए मैं उन्हें उचित मार्गदर्शन देकर उनकी सहायता करूं। लेकिन मैं जिस उद्देश्य को लेकर यहां आया था, तत्काल उसी में लग गया। दस वर्ष तक स्वयं आर्थिक कठिनाइयों में से गुजरते हुए भी ये दो पुत्र न केवल मेरे भरण-पोषण का, बल्कि सारे भारत में उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम लगातार की गई मेरी धर्मचारिकाओं में सहयोग देने का अपना कर्तव्य निभाते रहे। उन दिनों इस देवदत्त का कहीं कोई नामोनिशान नहीं था और न कोई अन्य साधक सहायता के लिए तैयार हो पाया था। प्रथम दस वर्षों तक ये पुत्र आर्थिक दृष्टि से बहुत समर्थ न होते हुए भी मेरे द्वारा प्रसारित विपश्यना की सेवा में जुड़े रहे और भारत के बाहर भी विपश्यना की नींव रखने में इन पुत्रों ने मेरी पूरी सहायता की। ये प्रारंभिक दस वर्ष भारत और विश्व में विपश्यना के पुनरुत्थान के इतिहास में अत्यंत महत्त्वपूर्ण माने जायँगे। मैं विपश्यना के जो बीज लेकर आया था, उन्हें यहां की धरती में रोपना आरंभ किया। परंतु इन्हें कोई पानी देने वाला ही न होता तो वे वहीं धरती में मुरझा जाते। कैसे उगते, बढ़ते और विशाल वृक्षों का रूप धारण करते? उन प्रारंभिक दस वर्षों तक ही नहीं, बल्कि आज तक मुझे इन पुत्रों की सहायता अपने पिता के भरण-पोषण मात्र के लिए ही नहीं, या विपश्यना के विकास से कोई आर्थिक लाभ लेने के लिए नहीं, बल्कि इस विद्या के प्रति मेरी दृढ़ निष्ठा को पूरा सहयोग देने के लिए और विपश्यना के विकास में लगे रह कर इसकी समृद्धि के लिए भी उपलब्ध है।

देवदत्त को विशेष आपत्ति मेरे पुत्र श्रीप्रकाश से है जबकि वह खूब जानता है कि जब बढ़ते हुए परिवार के लिए सामूहिक निवास-स्थान छोटा महसूस होने लगा तब छहों पुत्रों के अलग-अलग निवास-स्थान बने। मुझे उनमें से एक के साथ ही रहना था। श्रीप्रकाश के आग्रह के कारण मैं और उसकी माता उसके साथ रहने लगे और वह पूर्णरूप से हमारी देखभाल करने लगा। अब जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, मन बहुत सबल और सक्षम है तो भी शरीर जर्जरित होता ही जाता है। मैं विपश्यना के लिए बाहर की यात्रा नहीं कर सकता, अतः रोज सुबह मेरे साथ साधना करने के बाद घंटे-डेढ़ घंटे मुझसे पगोडा तथा अन्य विपश्यना संबंधी कार्यों के बारे में आवश्यक निर्देश लेता है और अपने व्यावसायिक जीवन में व्यस्त रहने पर भी उन्हें पूरा करता है। इसे देख कर इस देवदत्त के मन में विरोध क्यों जागता है, वही जाने!

(१०) एक और ऐसा निराधार, मिथ्या लांछन भी उस पर लगाया गया कि वह मेरा वारिस बन कर पगोडा तथा धर्म-केंद्रों की संपत्ति को हथिया लेगा जो कि नितांत असंभव है। अब तक ऐसा एक भी प्रसंग नहीं आया और न भविष्य में आने की आशंका है। क्योंकि प्राचीन परंपरा के अनुसार मेरी ही भांति उसका भी भगवान बुद्ध के आदेश के अनुसार यह प्रण है कि **'धम्मेन न वणिं चरे'** *(उदानपालि - ५२)*--धर्म को व्यवसाय बना कर उससे अपनी आजीविका न चलाये। मेरा वारिस होने से वह विपश्यना का आचार्य नहीं बन सकता। केवल जैसे आज देखता है वैसे ही वह अवश्य देखेगा कि पगोडा का कहीं कोई गलत उपयोग न हो जाय। पगोडा अथवा अन्य किसी भी विपश्यना केंद्र पर न मेरी मल्कियत है, न कभी मेरे किसी पुत्र अथवा किसी ट्रस्टी की हो सकती है। उन पर ऐसा मिथ्या लांछन लगाया जाना कितना गलत है।

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

आचार्य

१-२. श्री अशोक एवं श्रीमती पुष्पा पवार, नाशिक, *धम्मनासिका की सेवा*

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1-2. Mr. Laith & Mrs. Melanie Wark, Dubai. *Spread of Dhamma in Kenya*

नये उत्तरदायित्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. ए. श्रीनिवास मूर्ति, बैंगलोर
2. Mr. Adam & Mrs. Rebecca Shepard, *USA*
3. Ms. Joelle Caschera, *France*

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्री रघुनाथ कुरुप, केरल
२. श्री विनय सोमवंशी, पुणे
३. श्रीमती सुजाता गायकवाड, ठाणे.
४. श्रीमती मीनू अग्रवाल, जयपुर
५. श्रीमती मोनिका सोमैया, कर्नाटक
६. श्री राजेश बावनकुले, अमेरिका
७. श्री मंगेश जोशी, नाशिक
8. U Win Maung, *Myanmar*
9. U Myo Myint Thein, *Myanmar*
10. Daw Mya San, *Myanmar*
11. Daw Aye Mon, *Myanmar*
12. Mr. Pathagawage Rangith Dharmasena, Sri Lanka
13. Mrs. Ira Perera, Sri Lanka
14. Mr. Christian Tietz, Australia
15. Mr. Dan Rosenberg, USA,
16-17. Mr. Scott Perchall & Mrs. Karen Karagheusian, Canada

बालशिविर शिक्षक

स्थानाभाव के कारण जनवरी के २८ और फरवरी के ४०, बालशिविर शिक्षकों के नाम बाद में प्रकाशित करेंगे। इस बीच सूचनानुसार वे अपना कार्य करते रहें।

Registered No. NSK/235/2012-2014

WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014

न चाहते हुए भी मैं इतना लंबा विवरण इसलिए दे रहा हूं कि कहीं यह देवदत्त अथवा उससे दुष्प्रभावित हुए उसके साथी धर्म के इस महान कार्य की मिथ्या निंदा करके अपना भविष्य न बिगाड़ लें। मेरे मन में उन सबके प्रति मंगल भावना ही मंगल भावना है। उनका होश जागे और वे ऐसे धर्मविरोधी दुष्कर्मों से बचें। उनके किसी दुष्कर्म से अन्य किसी भी साधक का अमंगल न हो। इसलिए उनके साथ-साथ वर्तमान और भविष्य के सभी साधक-साधिकाओं के प्रति मेरी हार्दिक मंगल भावना है। सबका मंगल हो! सबका कल्याण हो!!

कल्याणमित्र,
सत्यनारायण गोयन्का

पुनश्च -- मेरे धर्मपुत्र धनंजय ने अपने वृद्ध और बीमार माता-पिता की सेवा में समय देने के लिए विपश्यना के कार्यों से त्याग-पत्र दे दिया। उसने अब तक मेरी और धर्म की जो भी सेवाएं की, उनके लिए उसका उपकार मानते हुए उसके भावी सुखद जीवन की मंगल कामना करता हूं।

-- मैं अपने सभी पुत्रों को भी यही धर्म-आदेश देता हूं कि वृद्ध माता-पिता की सेवा तो करनी ही है; परंतु कभी कोई धर्म-विरुद्ध अकुशल कार्य न करें। इसी में उनका उत्तम मंगल है।

-- धनंजय के त्याग-पत्र देने के कारण जिन्हें उससे पत्राचार करना पड़ता था, वे अब निम्न आचार्यों के साथ पत्र-व्यवहार करें--

(१) श्री अरुण तोषणीवाल, **फैक्स**- 022- 2493-6166. ई-मेलः arun@toshniwal.com; (२) श्री महासुख खंधार, ई-मेलः khandhar@mayfairhousing.com

आवश्यकता है एक संस्कृत मर्मज्ञ की

संस्कृत भाषा के सुविज्ञ पंडित की आवश्यकता है, जो ग्लोबल पगोडा, गोराई (मुंबई) में रह कर निम्न विषयों पर अनुवाद सहित व्याकरण-सम्मत व्याख्या तथा अनुसंधान का कार्य कर सकने में सक्षम हों। वेतन सहित भोजन एवं निवास की भी सुविधा प्रदान की जायगी।

(१)- श्री पाणिनी, श्री कात्यायन और श्री पतंजलि का कार्यकाल क्या था? (टाइम-लाइन) (२)- श्री पाणिनी ने किस भाषा का संस्कार किया? यानी वह भाषा उस समय किस नाम से जानी जाती थी? (३)- श्री पाणिनी के बाद श्री कात्यायन ने क्या सुधार किया? (४)- उनके बाद श्री पतंजलि ने ऐसा क्या किया जिससे भाषा सरल एवं सुबोध हुई और उसमें अनेक ग्रंथों की रचना हुई? आदि-आदि...। **संपर्क**- (१)- सुश्री प्रीतिबेन डेढिया, ईमेलः priti.dedhia@gmail.com; (२)- श्रीमती शारदाबेन संघवी, फोनः 02223095413 ईमेलः s_sanghvi@hotmail.com

पूज्य गुरुदेव को पद्मभूषण सम्मान

बड़े हर्ष की बात है कि भारत सरकार ने पूज्य गुरुदेव को समाजसेवा के लिए पद्मभूषण से सम्मानित किया है, जो वस्तुतः धर्म का सम्मान है।

दोहे धर्म के

कोई बैरी सदृश हो, करे घोर अपकार।
तो भी मन मैत्री करे, करूं भले प्रतिकार॥

जिससे जीवन में कभी, मिला हृदय भर प्यार।
उसका मुझसे हो नहीं, किंचित भी अपकार॥

बैर बैर से ना मिटे, बढ़े द्वेष दुष्कर्म।
बैर मिटे मैत्री किये, यही सनातन धर्म॥

शासन में जागे धरम, उखड़े भ्रष्टाचार।
धनियों में जागे धरम, शुद्ध होय व्यापार।।

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोनः 2493 8893, फैक्सः 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

मानस री गांठ्यां खुलै, अंतस निरमळ होय।
निरमळ निरमळ चित्त मँह, प्यार तरंगित होय॥

जित देखूं दुखिया दिखै, सुखिया दिखै न कोय।
जन जन मँह जागै धरम, जन जन सुखिया होय॥

बांटी विमल विपस्सना, सत्य धरम रो ग्यान।
जो जो भी धारण कर्‌यो, हुयो अमित कल्याण॥

धरम दान रै जग्य को, पायो पुण्य अपार।
सगळा प्राणी जगत रा, होवै भागीदार॥

एक साधक
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422 403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422 007. **बुद्धवर्ष** 2555, **माघ पूर्णिमा,** **7 फरवरी, 2012**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/235/2012-2014**

WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712,
243238. **फैक्स :** (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org